आलोचना का परिप्रेक्ष्य

सम्पादक
रोहिताश्व

विद्या प्रकाशन
'सी' 449 गुजैनी, कानपुर-22

'आलोचना का परिप्रेक्ष्य' नामक प्रस्तुत पुस्तक यू०जी०सी० एकेडेमिक स्टाफ कालेज, गोवा विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग से हिन्दी पुनश्चर्या पाठ्यक्रम - 2005 हेतु प्रकाशित

ISBN : 81-88554-10-3

मूल्य : तीन सौ पचास रुपये मात्र

☛ पुस्तक	:	**आलोचना का परिप्रेक्ष्य**
☛ संपादक	:	रोहिताश्व
☛ प्रकाशक	:	**विद्या प्रकाशन** सी-449, गुजैनी, कानपुर - 22 ☎ : (0512) - 2285003 Mo. : 9415133173
☛ संस्करण	:	प्रथम, 2005 ई०
☛ मूल्य	:	Rs. 350.00
☛ शब्द-सज्जा	:	च्वाइस कम्प्यूटर ग्राफिक्स बर्रा, कानपुर
☛ मुद्रक	:	अजित आफसेट रामबाग, कानपुर

ALOCHANA KA PARIPREKSHYA

Edited By : Rohitashwa

अनुक्रम

क्रम	अध्याय	लेखक	पृष्ठ
1.	रामविलास शर्मा की आलोचना का अंतिम दौर	✍ नामवर सिंह	7
2.	समालोचना के आयाम	✍ रमेश कुन्तल मेघ	23
3.	साहित्य विश्लेषण और समाजशास्त्र	✍ शिव कुमार मिश्र	39
4.	रामचन्द्र शुक्ल और मानवीय भाव	✍ राम प्रकाश	53
5.	आलोचक नामवर सिंह	✍ कमला प्रसाद	59
6.	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र में सौन्दर्यानुभूति	✍ अरविन्द पाण्डेय	71
7.	भारतीय साहित्य में भारतीयता	✍ इन्द्रनाथ चौधरी	79
8.	पश्चिमी आलोचना के नये आयाम	✍ किरण बुडकुले	89
9.	तुलनात्मक साहित्य : स्वरूप एवं नयी दिशाएँ	✍ आनन्द पाटिल	101
10.	उपन्यास का सौन्दर्यशास्त्र	✍ कुँवर पाल सिंह	109
11.	आँचलिकता : गोवा और कनाडा का साहित्य	✍ फ्रांसिस फर्नाण्डिज	121
12.	हिन्दी उपन्यास और महिला लेखन	✍ एम० वेंकटेश्वर	128
13.	रागदरबारी उपन्यास का मूल्यांकन	✍ सुवास कुमार	137
14.	राजेन्द्र यादव का कथा साहित्य और मध्यवर्ग	✍ अर्जुन चव्हाण	150
15.	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास : परिवर्तित शिल्प	✍ रतन कुमार पाण्डेय	159
16.	मुक्तिबोध कृत 'अँधेरे में' कविता : कथ्य एवं शिल्प	✍ रोहिताश्व	172
17.	उत्तरशती और त्रिलोचन का काव्य	✍ रवीन्द्रनाथ मिश्र	195
18.	'पटकथा' को यहाँ, यहाँ और यहाँ से भी देखो	✍ प्रो० दिलीप सिंह	202